RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-12
December -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

हरियाणा में रामकथा

डॉ. गीता सहाय

हिन्दी विभाग, गया कालेज, गया

वर्तमान भौगोलिक हरियाणा प्रथम नवम्बर, 1966 ई० को भारत के मानचित्र पर सत्रहवें स्वतन्त्र राज्य के रूप में उभरा, किन्तु यह भूखण्ड अनादिकाल से भारतीय संस्कृति, दर्शन और साहित्य का सर्जक पालक रहा है। एक किवदंती के अनुसार इसी प्रदेश के सन्निहित सरोवर में प्रजापति ब्रह्मा उत्पन्न हुए थे।

यस्मिन् स्थाने स्थितं हयण्डं तस्मिन संनिहतिं सरः।
अण्डमध्ये समुत्पन्नां ब्रह्मा लोकपितामहः ।।

और इसी क्षेत्र के पृथूदक (पिहोवा) नगर में ब्रह्मयोनि तीर्थ के किनारे चतुवर्ण सृष्टि की संरचना हुई। दिल्ली संग्रहालय के 1328 ई० के शिलालेख में इस भूमि को "दशोडस्ति हरयाणाख्यः पुथिवयां स्वर्ग सन्निभः" कहकर "धरती का स्वर्ग" की संज्ञा से विभूषित किया गया है।

इस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति एवं खाद्य सम्पन्नता की द्योतक सुप्रचलित कहावत है –

शालाक अलवर बीच हरियाण।
जित घी दूध दही का खाणा।।

प्रस्तुत प्रपत्र साहित्यिक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध इस प्रदेश का संक्षिप्त परिचय देते हुए यहां के साहित्य में रामसाहित्य परम्परा को रेखांकित करने और इसकी प्रमुख प्रवृत्तियों का अध्ययन करने का एक प्रयास है।
हरियाणा वेदकालीन शब्द है जिसकी व्युत्पत्ति 'हरि' 'हर' और 'यान' शब्दों के योग से हुई मानी जाती है। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के अनुसार हरियाणा 'हरिधान्यक' शब्द से निकला है। डॉ० बुद्धप्रकाश के मत में आभीरों व अहीरों के बाहुल्य से इसका नाम आभीराणा" से हरियाणा हो गया है। स्कन्दपुराण" में एक स्थान पर कुरुक्षेत्रे हरिक्षेत्रे ..... " का उल्लेख है। इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया का मत है कि हरियाणा शब्द का विकास सम्भवतः हरि (हरियाली) से हुआ है। अब यह निर्विवाद सत्य है कि इसका नाम हरियाणा है।

ऋगवेद काल से ही सांख्य दर्शन, श्रीमद्भागवत गीता, महाभारत, मनुस्मृति, कादम्बरी जैसे रत्नों ने यहां के साहित्याकाश को अपनी आभा से मण्डित किया है। प्राचीन काल से प्रवाहित संस्कृत भाषा की सुरसरि पालि, प्राकृत, अपश्रश में परिवर्तित होती हुई खड़ी बोली व हरियाणवी तक आ पहुंची। हिन्दी साहित्य के आदि रचयिताओं में पुष्पदंत और श्रीधर हरियाणवी गण्य थे। रोहतक में अस्थल बोहर मठ के संस्थापक और गोरखनाथ के गुरूभाई चौरंगीनाथ (पूरन भगत) की 'प्राण सांकली' नाथ साहित्य की अमर कृति है। सर्वश्री गरीबदास, जैतराम, नितानंद, हरदेदास, घीसा साहब, निश्चलदास जैसे संत और शेख बाबा फरीद, हजरत बदबू अली कलंदर, गुलाम जीलानी रोहतगी सूफी काव्य की अनमोल धरोहर है। श्सूर सूर तुलसी ससि" वाले सूरदास भी मूलतः हरियाणा के निवासी थे। साहिब सिंह श्मृगेन्द्र" और भाई संतोखसिष्ठ ने रीतिकाल को समृद्ध किया। गंधर्व पुरूष पं. लखमीचन्द, पं. माधवप्रसाद मिश्र और बालमुकुन्द गुप्त सरीखे साहित्यकार भी इसी धरती की देन है।

इस प्रदेश का जीवन हषोललास से ओत प्रोत है सावन के झूले, फागण के नृत्य, होली का हुड़दंग, विवाह–शादी के सीठणे, चौपालों की रागनी का साथ देते घड़वा, बांसुरी और खड़ताल, गूगा पीर के मेले, नट–बाजीगरों के खेल, तीर्थों के पर्व–स्थान, रामलीला, रासलीला, मांगलिक अवसरों पर आयोजित सांग, कुश्ती और कबड्डी के दंगल, रण–बांकुरों का शौर्य, सादा जीवन, उच्च विचार, सरल हृदय, अतिथि सेवा, बुजुर्गों का सम्मान, गांव की बेटी सबकी बेटी जैसे आदर्श, प्रत्येक परिस्थिति में सकारात्मक हास्य की सृष्टि अन्यत्र दुर्लभ हैं।

शील सौंदर्य और शक्ति की प्रतिमा श्रीराम जनमानस की आस्था, श्रुद्धा और भक्ति के आधार पर स्तम्भ है। हरियाणा आध्यात्मिक चेतना की पवित्र भूमि है,रामसाहित्य परम्परा के विकास में इस क्षेत्र ने विविधभुखी और बहुआयामी रचनाएं लिखी गई जिन्हें तीन चरणों में विभकक्त किया जा सकता है–

1. उद्भव काल सं० 1000 – 1375.
2. मध्यकाल सं. 1375 – 1900
3. आधुनिक काल सं. 1900 – आजतक

उद्भव काल –

हरियाणा में रामसाहित्य परम्परा का उद्भव सं. 1029 के आसपास से माना जाना चाहिए। अपभ्रंश के अन्तिम कवि पुष्पदंत का नाम हरियाणा की रामसाहित्य परम्परा के प्रथम कवि के रूप में लिया जाता है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री, देवेनद्र सिंह विद्यार्थी, सरनदास भनोत ने इन्हें रोहतक जिले का निवासी माना है। इन्होंने अपने काव्य ग्रन्थ 'सिसट्ठि महापुरिस गुणालंकार (महापुराण)" में श्री रामकथा का सन्निवेश किया है। यह महाकाव्य तीन खण्डों और 102 संधियों (सर्गों) में विभक्त है। संधि संख्या 69 से 79 तक रामकथा के विशिष्ट प्रसंगों की उद्भावना की गई है। कवि पुष्पदंत प्रकृति–चित्रण में सिद्धहस्त है। उन्होंने

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सूर्योदय, चन्द्रोदय, संध्या, सूर्यास्त, ऋतु, नदी व सरोवर आदि का मनोरम वर्णन किया है।

मध्यकाल –

परिमाण और परिणाम की दृष्टि से इस कालखण्ड को हरियाणवी रामसाहित्य परम्परा का स्वर्णयुग कहा जाए तो अतिश्योक्ति न डोगी। सं. 1459 के लगभग बलल्लभगढ़ के निकट जोइणिपुर में जन्में ईसरदास (ईश्वरदास) सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। इनका काव्यग्रन्थ भरत विलाप" 1558 के लगभग लिखा गया जिसका उल्लेख आचार्य विश्वप्रसाद मिश्र ने नागरी प्रचारिणी सभा काशी के खोज विवरण में किया है। "भरत विलाप" की कतिपय मार्मिक पंक्तिया द्रष्टव्य है –

मिल के गए राम के ठाअई। धाय राम तब अंक में लाई।।
भरत परे राम के चरना। उपजा प्रेम जाई नहीं बरना।।

इनकी रचना 'अंगद पैज' की 1806 में की गई प्रतिलिपि श्री रामानंद त्रिपाठी (दरवेशपुर, डाकखाना भरवारी, जिला इलाहबाद) के पास सुरक्षित है।

सं. 1535 में वैशाख शुक्ल पंचमी को बल्लभगढ़ के सीही ग्राम में जन्में सूरदास की जगत् प्रसिद्ध रचनाएं हैं सूरसागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी। सूरकृत रामसाहित्य के विषय में डॉ. मातादीन गुप्त लिखते हैं – "सूरदास ने राम का गुणगान और उनकी लीलाओं का वर्णन उतनी ही तन्मयता से किया है जितना तुलसीदास नेकृष्ण लीलाओं का किया है ..... सूरदास के रामचरित के भी अनेक पद कला की दृष्टि से सुन्दर बन पड़े हैं। इसीलिए राम साहित्य में सूरदास का योग उपेक्षणीय नहीं है अपितु उल्लेखनीय है।"

हरियाणा के अम्बाला जिले के बूड़िया ग्राम में जन्म लेने वाले भगवती दास धर्मप्रचारक यायावर थे। इनकी 25 रचनाएं अजमेर के भटूटारकीय शास्त्र भण्डार में सुरक्षित हैं। इनका सीतासतु" संवादों की दृष्टि से एक अनुपम ग्रन्थ है। इसमें बारह मासों के अलग–अलग संवाद हैं। कृति में सीता, रावण और मन्दोदरी की मनोवृति कव विश्लेषण है। अपने गांव का उल्लेख कवि ने किया है –

'नगर बूढ़िये बसे भगोती, जन्मभूमि है आसि भगोति,
अग्रवाल कुल बंसल गोती, पंडित जन निरख भगोती।।

सं. 1680–1690 तक होने वाले घरोड़ा हृदयराम का उपनाम 'रामकवि' था। इनके पांच ग्रन्थ मिले हैं –जिनमें हनुमान नाटक (1680) की रचना हनुमन्नाटक के आधार पर कवित्त–सवैया शैली में की गई। पंजाब हरियाण में इसे रामचरित मानस के समान महत्वप्राप्त है। कहते हैं गुरू गोविन्द सिंह इसे सदैव अपने साथ रखते थे। जहांगीर नेफारसी अनुवाद करवाकर इसे निजी पुस्तकालय में रखा था।

सं. 1774 की वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को रोहतक जिले के छुड़ानी गॉव में जन्में गरीबदास की वाणी "झश्रीग्रन्य साहिब" में कई स्थलों पर रामकथा की प्रस्तुति हुई है। राग विलावल, राग धनासरी, विचार का अंग, सुमरन का अंग, राग आसावरी आदिसर्गों में राम निर्गुण और सगुण दोनों रूपों का वर्णन है।

सीता सतवंती सही, रामचन्द्र की नारि।
रावण दाने छलि गई, बिनही ज्ञान विचारि।
तीन वचन समझी नहीं, मेटी राम की कार।
समंद सेत बंध बाधि करि, हनुमत लंक सिधार।
(विचार का अंग)

सं. 1780 में नारनौल में जन्में नितानंद के श्सत्य–सिद्धान्त प्रकाश" की साखियों और पदों में राम निराकार रूप में महिमा का वर्णन है। गुरूदेव का अंग, सुमिरन का अंग, विरह का अंग, पतिव्रता का अंग, चेतावनी का अंग, माया का अंग में राम नाम की महिमा, रामनाम की खुमारी का वर्णन हुआ है।

राम नाम हृदय धरो गहो ज्ञान वैराग।
सब जल सीतल हो गया बुझी अपनी आग।
(सुमरन का अंग)

सं. 1789 में चुनिया जिले के सेखव गांव में गुलाबसिंह बचपन से विरक्त स्वभाव के थे। घर बार छोड़ कुझक्षेत्र के निकट गुझ संत मानसिंह के पास रहते हुए संस्कृत का आधार लेकर उन्होंने 'अध्यात्म रामायण' लिखी। जिसके विषय में डॉ. मनमोहन सहगल ने कहा कि – "कवि की मौलिक प्रतिभा इतनी तेजस्विनी है कि अध्यात्म रामायण को अनुवाद मात्र नहीं कहा जा सकता है। इसमें की गई नवोद्भावनाएं एवं प्रसतुतिकरण इतना चमत्कारपूर्ण है कि इसके लिए सही संज्ञा 'पुनः सृजन' होना चाहिए ।"

सं. 1794 में संत गरीबदास के घर रोहतक जिले के छुड़ानी गांव में जन्में जैतराम ने अपने ग्रन्थ साहिब में एक अंग का नाम "रामचन्ध की कीर्ति" रखा इसमें रघुवंश का परिचय देते हुए रामजन्म, बाललीला, राम विवाह, कैकेयी वरदान, राम वन गमन, दशरथ मरण आदि प्रसंग हैं।

बोले रामचन्द्र औतारा। भरत वीर से कहठे विचारा।
तुम मानो वचन हमारा। उलटे जावो नगर मंझारा।
सिकल विकट मन में मति लाओ। अयोध्या नगरी राज पठाओ।

सं. 1844 में जन्में कैशल नरेश के दरवारी कवि भाई संतोखसिंह ने बाल्मीकि रामायण का भाषानुवाद 89, किया जिसने प्रसन्न होकर कैथल नरेश ने उन्हें मोरथल गांव भेंट में दिया। कुरूक्षेत्र निवासी रामसिंह ने लघु रामायण" की रचना की।

आधुनिक काल –

RRIJM 2015, All Rights Reserved

आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य में पुनर्जागरण का मुखर स्वर सुनाई देता है। अतः इस काल में अन्य विधाओं की भांति रामकथा का पुनराख्यान भी विविध रूपों में हुआ।
सं. 1952 में हिसार जिले के जुई गांव में जन्में रामसिंह 'अरमान' का नाम रामसाहित्य परम्परा में अग्रणीय है। इनकी 'अरमान रामायण' में रामचरित मानस का अनुकरण करते हुए सात खण्डों का विधान किया गया। इस ग्रन्थ की आरम्भिक व अन्तिम पंक्तियां देखिए –

कथा शुरू अब होत है, करता है अरमान
सतगुरू शिवव्रत लाल है, उनकी दया महान।

रामकथा वर्णन करी, रामसिंह अरमान,
सतगुरू शिवव्रतलाल ने किया मेरा कल्याण।

सं. 1967 में रोहतक जिले के कोसली गांव में जन्में सुखरामदास ने सं. 2022 में 'श्रीरामकीर्तन रामायण' की रचना की जिसमें 859 पद हैं और सात काण्ड हैं।

जय रघुवर जय भरत शत्रुध्न जय लक्ष्मण जय जय हनुमान।
जय सीता उर्मिला मांडवी जय श्रुतिकीरति शक्ति महान।।

सं. 1976 में जन्में रत्न चन्द्र शर्मा ने इसी परम्परा में निषादराज, अग्निपरीक्षा, रामराज्य, वनगमन आदि महाकाव्य तथा शबरी, त्रिजट टेकरक्षा आदि खण्डकाव्य रचे। वाल्मिकी रामायण के अयोध्याकांड में आए 'गुह निषाद' के आधार पर 'निषादराज' की रचना हुई। 'अग्नि परीक्षा' के केन्द्र में लंका में घटित घटनाएं हैं – अशोक वाटिका वास से लेकर युद्धोपरांत अग्निपरीक्षा व अयोध्यागमन तक। रामराज्य 16 वर्गों से युक्त महाकाव्य है जिसमें सीतावनवास, शम्बूक वध, राम का राजयाभिषेक, लवणासुर व शत्रुध्न का समर, श्रृत्तिकीरति का विरह् वर्णन, अश्वमेघ यज्ञ आदि वर्णित है। 'त्रिजट टेकरक्षा' के नायक मुनि त्रिजट विपन्नावस्था में शिक्षा, दान, दास्यवृत्ति का सहारा नहीं लेते। सरयू तट पर मुक्त हस्त से वस्त्राभूषण दान करते श्रीराम के विषय में सुनकर पत्नी के आग्रह पर त्रिजट वहां जाते हैं श्रीराम प्रसन्न होकर उन्हें सैकड़ों गोओं का स्वामित्व दे विदा करते हैं।

सं. 1982 में जन्में लालाधर, 'वियोगी' की पीड़ा की पगडंडियां (2004) में श्रीराम के जीवन की पीड़ा का मार्मिक वर्णन कर उसे विश्व पीड़ा का रूप दकर अनोखी उद्भावना की गई है।

सं. 1990 में नारनौल में जन्में पुरूषोत्तरदास 'निर्मल' रामसाहित्य परम्परा के सशक्त कवि है।
'विधुरा' कैकयी के पात्र पर आधारित लीक से हट लिखा गया महाकाव्य है। इसमें नारीको कलष पीयूष, त्याग की मूर्ति, संवेदना से तुष्ट, काठ की तरी आदि विशेषताओं से मंडित किया गया है।

सं. 1995 में जींद नगर में जन्में रामावतार अभिलाषी की 'भूमिजा' प्रबन्धात्मक रचना है जिसका आधार अकाल निवारण के लिये जनक द्वारा हल चलाने का प्रसंग है। लक्ष्मी (सीता) श्रम की सन्तान है, वह नर रूप नारायण की सहचरी तभी बनती है जब श्रम उसका जनक बन चुका हो। 'हनुमान छयालीसा' रामसाहित्य से संबंधित आध्यात्मिकता से ओतप्रोत लघुकाव्य है।

लोककाव्य परम्परा

हरियाणा के गांव–गांव में मंदिर है। इस भूमि की पुण्य चेतना से ओतप्रोत लोकगीत राम की कथा, नाम महिमा व स्वरूप से प्रभावित है इसलिये इसे 'रामभजनियां का देस' भी कहा जाता है।

चालो है भैणा रामभजनियां के देस
लोभ मोह उड़े दोनों ए कोन्यां घरम तुले हैं रोज।
चालो है भैणा राम भजनियां के देस।
.....राम अर लछमण दशरथ के बेट्टे दोनों बन में जां, हे किते राह में मिले भगवान...
इक बन चाले दो बन चाले तीजे में लग आई प्यास, हे किते राह में मिले भगवान।

आध्यात्मिकता से ओतप्रोत हरियाणवी जनमानस समय–समय पर रामकाव्यों पर आधारित सांगों का प्रदर्शन अपने–अपने क्षेत्र में कर गदगद होता है। इनमें मुख्य है –
1. 10 वी शती उतरार्ध – अहमदबख्श रामायण (अहमदबख्श थानेसरी)
2. सं. 1927 श्री राम नाटक – (देवतराम, पुण्डरी कुरूक्षेत्र)
3. सं. 1934 रामायण – नत्थीराम द्विज, हथीन फरीदाबाद
4. सं. 1938 आर्य संगीत रामायण – यशवंत सिंह वर्मा टोहानवी
5. 1943 हरियाणा तिमिर भास्कर रामायन रमेश्वरदत्त शर्मा, कलायत, कैथल
6. सं. 1943 रामायण – शादीराम, सीवन कैथल
7. सं. 1974 सांग रामायण – रामानन्द आजाद, गोरिया रोहतक
8. सं. 1976 रामचरित मानस – रामेश्रदयाल शास्त्री (हरियाणवी पद्यानुवाद) पाल्हावास रेवाड़ी

सामान्य प्रवृत्तियां

रामसाहित्य पर विहंगम दृष्टि डालने पर कुछ सामान्य वस्तुगत एवं शिल्पगत प्रवृत्तियां उभर कर आती है।

1. हरियाणा का रामकाव्य विविधि रूपों में रचा गया है – निषादराज, अग्निपरीक्षा, वनगमन, विधुरा महाकाव्यय त्रिजट टेकरक्षा, शबरी, भूमिजा महाकाव्य हैं जबकि रामायण संज्ञक लोककाव्यें की श्रेणी में अहमदबख्श नत्थीराम द्विज शादीराम आदि की रचनाएं रखी जा सकती हैं।
2. श्रीराम का सगुण, निर्गुण, आदर्श, अवतारी, मानवीय, दैवी, लोकमंगलकारी रूपों में वर्णन हुआ है। राम का

नाम राम से बढ़कर बताया गया है। परमेश्वर व पुरूषोत्तम दोनों रूप है।

3. इस परम्परा के अन्तर्गत रामेत्तर पात्रों को भी सजीवता से प्रस्तुत किया गया है। जिनमें सतोगुणी पात्रों में सीता, कौशल्या, उर्मिला, भरत, लक्ष्मण, हनुमान, शबरी आदि आदर्श है। तमोगुणी पात्रों में कैकयी, रावण आदि को रखा जा सकता है।
4. हरियाणवी रामकाव्य का प्रेरणा स्रोत पौराणिक व प्राचीन ग्रंथ है यथा कूर्म पुराण, हरिवंशपुराण, विष्णु पुराण, वायु पुराण, वाल्मिकी रामायण, आध्यात्म रामायण, रघुवंश, भुशुंडी रामायण, पउमचरित, महारामायण, रामचरित मानस आदि से सुविधानुसार रामकथा के बिन्दु ग्रहण किये गये हैं।
5. प्रकृति के रम्य एवं उग्र दोनों रूप प्रकृति प्रेमी कवियों ने उकेरे हैं व प्रकृति को पृष्ठभूमि, आलंबन, उद्दीपन, मानवीयकरण, दूती, उपदेशिका आदि सरूपों में भव्यता से प्रस्तुत किया है।
6. रस–व्यंजना की दृष्टि से समृद्ध काव्यधारा में शांत व वीर रस प्रमुख है। वात्सल्य व करूण के भी सुन्दर उदाहरण मिलते हैं। रामायण संज्ञक रचनाएं रसानुभूति से ओततप्रोत है। प्रबन्ध काव्यों में श्रृंगार व वीर रस का मिश्रण है।
7. दोहा, सवैया, कवित्त, आल्हा, चम्बोला, मुक्ताल, यमक, श्लेष, उपका, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिश्याक्ति, मानवीयकरण, उर्दू व पश्चिमी – विभिन्न प्रकार के छंद, व शब्दालंकार एवं अर्थालंकार प्रयुक्त हुए हैं।
8. इस काव्यधारा में संगीत तत्व की प्रधानता है। राग रागनियों का प्रयोग सूरकृत रामायण, आर्य संगीत रामायण व अहमदबख्श रामायण में सर्वत्र सुन्दर बन पड़ी है।

कौशल्या को गोद में एक खुबसूरत लाल
चन्द्र सा तन मुख कंवल धन मृग नैन सनें दो भाल
लाल महतारी के दिल का टुकड़ा जा बलिहारी ममता भारी
चक सौ–सौ बार मुखड़ा चूमे
मां नही रजती ऐसी प्यासी
(अहमदवख्श थानेसरी रामायण पृ. 11–12)

9. भाषा सौष्ठव की दृष्टि से यह काव्य अति सुन्दर बन पड़ा है। अवधी, ब्रज, खड़ी बोली, हरियाणवी, पंजाबी, देशज शब्दों का भण्डार है। ईश्वरदास ने अवधी, सूरदास व नत्थीराम द्विज ने ब्रज, भाई सन्तोरवसिंह व गुलाब सिंह ने पंजाबी मिश्रित ब्रज, अहमदबख्श ने उर्दू मिश्रित खड़ी बोली व रामेश्वरदत्त शर्मा ने हरियाणवी का प्रयोग किया है।

हरियाणा की रामसाहित्य धारा का फलक अत्यन्त व्यापक है। विविधमुखी रामसाहित्य की सृष्टि इस क्षेत्र में विपुल मात्रा में हुई है। खोजने पर यहां बहुत–सा रामकाव्य मन्दिरों, मठों, आश्रमों, व व्यक्तिगत संग्रहालयों में मिलने की संभावना है। आशा है शोध, खोज, संरक्षण, मूल्यांकन व सुजन की यह परम्परा और गति पकडेगी।
अस्तु!

संदर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी साहित्य को हरियाणा का योगदान, सं. डॉ० शशिभूषण सिंहल, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1991।
2. हरियाणवी संगीत का उद्भव और विकास, डॉ० राम मेहर सिंह, हरियाणा ग्रनथ अकादमी, पंचकूला, 2012।
3. हरियाणवी नृत्यगीत : एक अध्ययन, डॉ० अनिल सवेरा, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकुला ।
4. हरियाणवी भाषा और साहित्यय डॉ० बाबू राम, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला, 2011A
5. हरियाणा का हिन्दी साहित्य; सं० डॉ० लालचंद गुप्त 'मंगल', हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकुला, 2012।

RRIJM 2015, All Rights Reserved